4. मोहयालों की उपाधियाँ

सभी मोहयाल अपने नाम से पहले कोई उपाधि लगाते थे जैसे बक्शी, दीवान, महता, चौधरी, भाई, राय आदि. स्त्रियां भी इस सम्मान में भागीदार थीं. उनको भी बक्शियानी महतियानी, चौधरानी आदि कह क़र सम्बोधित किया जाता था.

यह उपाधियाँ क्या थीं और कैसे मिलीं? क्या यह रायसाहिब, पदमश्री आदि के समान विशिष्ट व्यक्ति को सम्मानित करने के लिए प्रदान की गयी थीं या प्रशासन में किसी पद का नाम था जिस पर वह व्यक्ति नियुक्त था, जैसे आजकल सेना में ब्रिगेडियर. हर एक उपाधि की पृथक पृष्टभूमि है परन्तु इनका प्रचलन मुस्लिम शासन से पहले नहीं था.

बक्शी और दीवान

बाबर ने अपनी पुस्तक "बाबरनामा " में अपने बक्शी और दीवान का उल्लेख किया है. राणा सांगा के साथ युद्ध में बाबर के बक्शी का नाम सुलतान मोहम्मद था. बक्शी सेना का सब से वरिष्ठ ओहदेदार था. उसके दीवान का नाम मगफूर था. आर. सी. मजूमदार की पुस्तक "दी मुग़ल एम्पायर" (भारतीय विद्या भवन) (अध्याय आठ) में अकबर के आधीन दीवान और बक्शी की कार्य सूचि दी है. दीवान राजा का मुख्य मंत्री था. शेष सभी का कार्य भी उसके पर्यवेक्षण में था. दीवान के पश्चात 'मीर बक्शी' था. वह सेना सम्बन्धी वरिष्ठ सलाहकार था. मनसबदारों के आधीन जो सेना थी उसका भी वह मुख्य निरीक्षक और महा वेतनाधिकारी था. केन्द्र की ओर से प्रांतों में भी बक्शी नियुक्त थे. मुगलों के समान टीपू के शासन में भी विभागाध्यक्ष दीवान कहलाते थे. उसकी सेना की टुकड़ियों (ब्रिगेड) का मुखिया भी एक बक्शी होता था.

छोटी रियासतें भी बड़े राज्यों के शाही ठाठ बाठ की नकल करती हैं. हम जानते हैं कई मोहयाल जम्मू और कश्मीर राज्य में दीवान के पद पर आसीन थे. यदि एक व्यक्ति किसी ऊंचे ओहदे पर होता था तो उसका सारा वंश या जाति वह उपाधि अपना लेते थी. उदाहरण के तौर पर पटेल गाँव के प्रबंधक का पद था. आज पटेल एक विशाल संप्रदाय है. अब हम सारांश में मोहयालों की उपाधियों का पुनरावलोकन करते हैं.

दीवान और **बक्शी** प्रशासन में ऊंची पदवियाँ थीं. दीवान सरकार का मुख्य राजस्व अधिकारी था. बक्शी सेना में बहुत ऊंचा ओहदा था. यह दोनों सम्मानार्थक उपाधियाँ नहीं थीं. क्योंकि यह शासन की पदवियाँ थी, मुस्लमान आदि कई और जातियों के लोग भी अपने नाम के साथ बक्शी लिखते हैं.

रायज़ादा : अर्थात राजकुमार - राजा का बेटा या राजवंशी.

महता अर्थात वित्तीय अथवा सम्पत्ति संबन्धी प्रभारी. पंजाबियों में कई खत्री तथा अरोड़े भी अपनी जाति 'महता' लिखते हैं. गुजरात प्रांत में तो महता जाति वाले बहुत लोग हैं.

चौधरी : कंजरूड़, वीरम और जफ्फरवाल आदि (जिल्ला गुरदासपुर) के गांवों के दत्त अपने नाम के साथ "चौधरी" की उपाधि लगाते हैं. कई शताब्दियों तक बहुसंख्यक तथा बड़े ज़मींदार होने के कारण हमेशा वहां के मुखिया या "चौधरी" रहे हैं.

भाई : सिख धर्म में यह बड़ी आदर सूचक उपाधि थी. करयाला के कुछ "छिब्बर" अनुयाइयों को सिख गुरुओं द्वारा स्वयं "भाई" की उपाधि दी गयी थी.